बी.एच.डी.सी–101

बी.ए. (हिंदी) ऑनर्स कार्यक्रम
BAHDH

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : BHDC-101
हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)

इग्नू जन-जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–101/2025

आपको **हिंदी साहित्य के इतिहास** के अंतर्गत आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल पर आधारित पाठ्यक्रम **बी.एच.डी.सी.–101** का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1, 2 तथा 3 पर आधारित है।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आदिकाल से रीतिकाल तक के हिंदी साहित्य के इतिहास, विकास तथा उसकी प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के रीतिकाल तक के विविध युगों के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, परिस्थितियों तथा विशिष्ट साहित्यकारों का परिचायत्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल के प्रमुख कवियों, उनके साहित्य और साहित्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनांक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1, 2 तथा 3 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी साहित्य के इतिहास के अंतर्गत आदिकाल से रीतिकाल तक की परिस्थितियों, साहित्य के, विकास, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा विशिष्ट कवियों के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।
2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। इस प्रकार इन प्रश्नों से आपकी हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य एवं रीतिकाल तक की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उनकी विशेषताओं संबंधी समझ विकसित होगी। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास अवश्य जमा करा दें।

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :

- **दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर**
- **जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए– 30 अप्रैल**

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)

(BHDC 101)

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी–101/टीएमए/2025
कुल अंक 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। 15 अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 700 शब्दों में तथा 5 अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

भाग-1

1. आदिकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए। 15
2. आदिकालीन रासो साहित्य का परिचय दीजिए । 15

भाग-2

3. निर्गुण संत परंपरा का परिचय प्रस्तुत कीजिए। 15
4. कृष्णकाव्य की कथ्यगत विशेषताएँ बताइए। 15
5. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5x3 = 15

   (क) द्वैतवाद
   (ख) सुंदरदास
   (ग) तुलसीदास

भाग-3

6. रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य विषयों की विशेषताएँ बताइए। 15
7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिएः 5x2 = 10

   (क) आलम
   (ख) रीतिकालीन कृष्णभक्ति काव्य